PARIVARTAN परिवर्तन
TAKSHILA तक्षशिला

हमार अंगना

अंक 15 | अर्द्धवार्षिक | पूर्व-स्कूल एवं अनौपचारिक शिक्षा पर परिवर्तन के प्रयासों का संकलन, आँगनबाड़ी केन्द्रों के लिए | अक्टूबर 2023 - मार्च 2024

संपादकीय

प्रिय पाठको,

जैसा कि आप जानते हैं बालघर आंगन परिवर्तन शिक्षा की एक उपइकाई है जो पिछले 10 वर्षो से लगातार आंगनबाड़ी केंद्रों के 3 से 6 वर्ष के बच्चों के साथ संलग्न है।इस प्रयास के अंतर्गत बालघर आंगन 21 गाँवों के 52 आंगनबाड़ी केन्द्रों के साथ जुड़कर काम कर रही है।बालघर आंगन का उद्देश्य बच्चों के अन्दर खेल, कविता, कहानी के माध्यम से शारीरिक, मानसिक एवं भाषा का ज्ञान कराना है, और कार्यक्षेत्र के आंगनबाड़ी केन्द्रों को सुदृढ करने हेतु सभी सेविकाओं, सहायिकाओं का मार्गदर्शन करना है।आंगनबाड़ी केंद्र द्वारा संचालित की गई गतिविधियों एवं कार्यक्रमों- अन्नप्राशन, गोदभराई, पोषाहार, दैनिक शैक्षणिक गतिविधी कार्यक्रमों में बालघर आंगन का हस्तक्षेप सीधे तौर पर सभी आंगनबाड़ी केन्द्रों के साथ हो रहा है।इस अंक के माध्यम से मैं बालघर आंगन के हस्तक्षेप से उत्पन्न प्रभाव, नई पहल, केन्द्रों के साथ सहयोग तथा पिछले छः माह के अनुभवों को आप सभी के साथ साझा कर रही हूँ।पिछले सत्र में अपने कोर एरिया के सात पंचायतो के साथ स्वास्थ्य और पोषण कार्यक्रम एवं कुछ प्रमुख कार्यशाला नन्हे कदम कार्यशाला, गुनगुन कार्यशाला, सेविका प्रशिक्षण, सहायीका प्रशिक्षण, बच्चो द्वारा नाटक (देश के बच्चे), हमार अंगना पत्रिका का विमोचन का आयोजन किया गया था, जिसमे सेविका, सहायिका, बच्चे और अभिभावक भी भाग लिए थे।तथा बहुत ही सुंदर तरीके से जुड़ कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

सप्रेम

मधुबाला

हमारी कार्य प्रणाली

बालघर आँगन अपने आस-पास के 21 गाँवों के 52 आँगनबाड़ी केन्द्रों के साथ कार्यरत है। हमारा काम 3 से 6 वर्ष के आयु के बच्चो के अन्दर मानसिक, शारीरिक तथा बौद्धिक विकास को प्रबल करना है। मानव जीवन में यह उम्र ऐसी उम्र होती है जिसे गीली मिट्टी भी कहा जाता है। यह एक ऐसी आयु सीमा है जिसमें बच्चों का सवार्धिक बौद्धिक विकास होता है। हम भी इसी बात का ध्यान रखते हुए बच्चों के विकास के लिए खेल-खेल के माध्यम से उन्हें भविष्य में सफल नागरिक बनाने हेतु तैयार करते है। ताकि ये बच्चे यहाँ से जाकर अपने केंद्र पर आदर्श बच्चे बनकर उभरें और अन्य बच्चों को प्रेरित कर सकें। क्लास के लिए हमारी 6 माह की एक कार्य योजना है। इस कार्य योजना को बनाने के लिए हम प्रथम संस्था, इकतारा संस्था, प्रार्थना एवं अश्वथ की किताबें तथा दिल्ली पब्लिक स्कूल पटना की शिक्षिकाओं एवं परिवर्तन के साथियो का धन्यवाद करना चाहती हूँ, जिनके सहयोग के बिना यह कार्य योजना सफल नही हो पाती। हमारे पाठ्यकर्म में मुख्य रूप से तरह-तरह की आवाज़ों (फौनिटिक साउंड) से अक्षर की पहचान, अपने परिवार की जानकारी, देश भक्ति कविता, मन पसंद के खाने, रंग-रंगीली में कला से जुड़े प्रशिक्षक का अनुभव, तरह-तरह के पोषक तत्व की जानकारी को शामिल किया गया है। जिससे बच्चे इन आवश्यक बातो को खेल-खेल के माध्यम से समझ सकें।

क्र. स.	बच्चों की संख्या	अभिभावक की संख्या	सेविका, सहायिका
1	40	23	2/2

हमार अंगना का विमोचन

दिनांक 28/11/23 को रुईया में अमिता जी केंद्र पर हमार अंगना पत्रिका का विमोचन किया गया। जिसमें आंगनबाड़ी केंद्र के बच्चों के साथ साथ अभिभावक भी शामिल रहे।इसमें नई-नई गतिविधियों का आयोजन किया गया था – प्रार्थना,कविता ,कहानी, समूह गतिविधि आदि। इसके साथ ही साथ आलोक जी ने हमार आंगन पत्रिका के बारे में विस्तार से जानकारी दी- यह पत्रिका अर्द्धवार्षिक है और इसमें छह माह की बातों को शामिल किया जाता है ।बच्चों की बातें,सेविका,सहायिका की बातें ,अभिभावक की बातें इत्यादि को शामिल करते हुए इस पत्रिका को बनाया जाता है।

रंग रंगीली

मुझे रंग काफी प्रभावित करते है। मैं जब भी रंग देखता हूँ तो मैं काफी उत्साहित हो उठता हूँ उन रंगों के साथ खेलने के लिए। ठीक यही हाल मेरा बच्चों को देखकर होता है, क्योकि बच्चे भी रंग के तरह निश्छल होते है जो बिना किसी छल-कपट या भेदभाव किये हर किसी पर अपनी छाप छोड़ जाते हैं।

मुझे बालघर आँगन से जुड़े बच्चों के साथ हर महीने कला से जुड़ी गतिविधि करने का मौका मिलता है। जिसमें मैं बहुत ही छोटे-छोटे बच्चों के साथ ढेर सारी बातें करता हूँ, उन्हें देखता हूँ, उनकी तोतली बोली को समझने का प्रयास करता हूँ, उनकी छोटी-छोटी हरकतों से उन्हें महसूस करने का प्रयास करता हूँ। मैं जब भी बालघर क्लास के लिए परिवर्तन बालघर में जाता हूँ तो क्लास में प्रवेश करने से पहले ही काफी रोमांचित हो उठता हूँ जब मैं 3 साल के बच्चे को कतारबद्ध होकर प्रार्थना करता देखता हूँ। कोई बच्चा अपनी दोनों आँखें बंद कर बड़ी ही निष्ठा के साथ प्रार्थना करता है तो कोई अपनी एक आँख आधा खोल मधुबाला जी द्वारा कराये जा रहे एक्शन को दोहराता है।

मैं एक दिन तरह तरह की सब्जी एवं फल विषय को लेकर इन नन्हे चित्रकारों के पास पहुंचा। सभी बच्चे मुझे देखते ही बड़ी उत्सुकता के साथ -राज सर, राज सर, करते मुझे घेरने लगे। मैंने बच्चों को एक गोले में बैठाकर अपने विषय आधारित गतिविधि को शुरू किया। सबसे पहले शहनबाज मुझे सब्जी पर आधारित कविता आलू-कचालू सुनाये तो पिंकी द्वारा -आम फलों का राजा है, कविता सुनाया गया। मैं बच्चों के लिए तरह तरह की सब्जी और फल का स्केच बनाकर लेकर गया था। सभी बच्चे अपनी अपनी रूचि के अनुसार एक एक फल और सब्जी में अपने मन पसंद रंग भर रहे थे। कोई लाल रंग का तरबूज रंग रहा था तो कोई काले रंग का संतरा। कोई बच्चा जल्दी जल्दी अपने चित्र में रंग भर दूसरे बच्चे के चित्र को छीन उसमे रंग भर रहा था। सभी बच्चों को रंग भरने में बहुत मन लग रहा था। उसमें एक लड़का था जिसका नाम आदिल था। आदिल अपने उम्र के दूसरे बच्चों से ज्यादा होशियार था, वह रंग भी भरता और जिस चित्र में रंग भरता उस फल का खुद से गाना बनाकर गुनगुनाता भी। बच्चों को इस तरह अपने अपने कामों में तल्लीन देख मैं बड़ा आनंदित हुआ। बच्चों ने बड़े उत्सुकता से काम किया। इतना ही नहीं कुछ बच्चों ने तो खुद से फल का स्केच कर उसमें रंग भी भरे। क्लास ख़त्म होते होते यह क्लास एक मस्ती का क्लास का रूप ले लिया था। सभी बच्चों ने उत्सुकता के साथ इस क्लास में भाग लिया और अपनी अपनी कलाकृति को प्रस्तुत किया।

वास्तव में बच्चों के साथ काम करना खास कर छोटे बच्चों के साथ, हमें एक नया अनुभव देता है, हमें बहुत कुछ नया सिखाता है।

राजवर्द्धन
कलाप्रशिक्षक – परिवर्तन

गुनगुन कार्यशाला

दिनांक : 07-02-2024, स्थान – (नारायणपुर) सोनी जी के केंद्र पर, समय : 10:30 – 12:30

सेविका – 2 , सहायिका – 2

उद्देश्य : - इस कार्यशाला का यही उद्देश्य है कि सेविका / सहायिका नई -नई गितिविधि को देखें समझें और

आंगनबाड़ी सेंटर पहुँचने के बाद वहाँ पर कार्यक्रम को शुरू किया गया।

प्रार्थना - तुम्ही हो माता -पिता तुम्ही हो, इस प्रार्थना को सेविका और सहायिका के बीच किया गया। जिसमें बच्चों और सेविका, सहायिका ने बहुत ही सुंदर तरीके के साथ प्रार्थना का स्वर वाचन

सेविका	सहायिका	बच्चे	अभिवावक
02	02	30	18

स्वर वाचन किया गया। बालगीत की प्रस्तुती होने के बाद सारी सेविकाओं और सहायिकाओं ने अपने–अपने तरीके से अलग –अलग बालगीत का स्वस्वर वाचन किया। सेविकाओं ने भी एक नई उर्जा के साथ बालगीत को प्रस्तुत किया।

बालगीत – दो मेढ़क कूदे ताल में इस बालगीत का भी स्वस्वरवाचन किया गया

कहानी – टिपटिप कहानी के दौरान बच्चे शांति पूर्वक बैठकर कहानी सुन रहे थे। किसी भी बच्चे की तरफ से आवाज़ नहीं आ रही थी। लग ही नहीं रहा था कि यहाँ पर कोई बच्चा भी है। उन सबों को देखकर ऐसा लग रहा था कहानी उनकी समझ में आ रही है। और कहानी वाचन के समय बच्चों की तरफ से सवाल और जबाब भी आ रहा था।

रंगों की दुनिया – बच्चों और सेविकाओं,सहायिकाओं को अलग - अलग ग्रुप में बाँटकर बच्चों से ही हाथ का पंजा का आकार तो वही दूसरे ग्रुप में कोलाज गतिविधि को कराया गया इस गतिविधि में सेविका से ज्यादा तेजी से बच्चे ही गतिविधि कर रहे थे।

देश के बच्चे – इस नाटक को दस बच्चों ने मिलकर किया। सब बच्चों ने अपनी प्रस्तुती बहुत ही सुंदर तरीके से की। इस नाटक में यह दिखया गया है कि पहले के समय में अंग्रेज़ लोगो ने भारतीयों को कैसे प्रताड़ित किया।

सहायिका प्रशिक्षण– रिपोर्ट 2023

दिनांक – 28 - मार्च 2024, स्थान - (परिवर्तन) बिल्डिंग 03, समय – 10:00-2 :30 pm

कार्यशाला का उद्देश्य : सहायिका अपने कार्यस्थल पर साफ-सफाई के महत्त्व को समझें।

सही पोषण के लिए मिली जिम्मेदारियों में वे अपनी भूमिका का निर्वहन किस प्रकार करती हैं? अपने केंद्र पर वे क्या-क्या करती है जिसमें पोषण की बात आती है?

कार्यशाला में पोषण को लेकर उनकी वर्तमान समझ को बढ़ाने का प्रयास किया जाता है।

सेविका की अनुपस्थिति में केंद्र पर पठन-पाठन में उनकी भूमिका को हम किस प्रकार और अधिक मजबूत बना सकतें हैं, जिससे पठन पाठन में भी वे सहायक की भूमिका में अपने आप को सक्रिय कर सकें?ऐसे सभी सवालों का समाधान ढूँढने का प्रयास किया जाता है।

सहायिकाओं की उपस्थिति 85

"तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो" मेरे (मधुबाला) और पूजा द्वारा यह गीत गवाया गया। उसके बाद सारी सहायिकाओं को खड़ा कराकर व्यायाम कराया गया जिसमें दायें-बाएं दिशा के बारे बताया गया। बाल गीत का स्वसर वाचन किया गया। उसके बाद सहायिका लोगों के द्वारा पिछली बार वाले बाल गीत का पूर्व अभ्यास कराया गया। फिर सारी सहायिकाएं अपनी –अपनी जगह पर बैठ गयीं और साफ सफाई के महत्व को पूजा जी द्वारा बताया गया - हम खुद को और दूसरों को कैसे स्वच्छ रख सकते है। कैसे हाथों की सफाई का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

उसके बाद एक **"एक मुर्गी एक बटेर"** बालगीत लयबद्ध तरीके से गवाया गया और **"एक डाल पर बैठा बंदर"** कविता सुन सारी सहायिकाएं बहुत खुश नज़र आ रही थी। मेरे (मधुबाला) द्वारा कहानी **"एककी –दुक्की "** सुनाई गयी।

राजवर्धन जी ने अलग अलग जानवर - खरगोश, चूहा और हाथी का पपेट बनवाया और उसकी कठपुतली(पपेट) के माध्यम से कहानी बताई।

सेविका प्रशिक्षण

दिनांक – 29– 30 मार्च 2024, स्थान- सभागार (परिवर्तन), समय - 10:00 AM से – 3:00PM

उद्देश्य: इस कार्यशाला का उद्देश्य सेविका, सहायिका को नई-नई गतिविधियों, पाठ्य सामग्री का निर्माण तथा नई तकनीक से अवगत कराना है। ताकि वे इन गतिविधियों को सीख कर अपने केंद्र के बच्चों को और बेहतर ढंग से इसका लाभ दे पाएं तथा आंगनबाड़ी केंद्र को और सुदृड बना सकें ।

कुल दो प्रखण्ड, कुल पंचायत : 10, सेविका : 103

29 मार्च से 30 मार्च तक सेविका प्रशिक्षण का आयोजन किया गया था जिसके लिए हमारे पटना D.P.S.से चार प्रशिक्षिकाओ को बुलाया गया था ।

प्रशिक्षिकाओं का नाम – रचना वर्मा, डॉली सिंह, मीनू तोलानी, शफा अकील

सेविका प्रशिक्षण के पहले दिन सभी सेविकाओं के साथ परिचय से शुरुआत किया गया फिर चारों प्रशिक्षाओं द्वारा स्वं मंगलम (दुर्गा माँ की स्तुति) इतनी शक्ति हमें देना दाता प्रार्थना

का स्वरवाचन करवाया गया। तथा प्रार्थना हम क्यों करते हैं? हमारे दिन की शुरुआत अच्छी हो तथा हम सच्चाई की राह पर चलें, जैसी बातें हुईं। फिर गतिविधियों को सेविकाओं के बीच किया गया। उसके बाद नई-नई कविताओं का स्वर वाचन किया गया - एक बुढ़िया ने बोई गाजर , ऊँट चला भाई ऊँट हिलता डुलता ऊँट चला, बोल भाई कितने , पैसा पास होता तो चार चने लाते। उसके बाद उन्होंने एक कहानी बहुत ही मजेदार तरीके से रोल प्ले के माध्यम से सुनाई। उसके बाद व्यक्तिगत स्व्च्छता पर बातचीत हुई- जैसे दो बार ब्रश करना चाहिए, सप्ताह में दो बार बाल धोना, साफ –सफाई का नियम,एक कदम स्वच्छता की ओर,शौचालय का इस्तेमाल, स्वच्छता से जुड़ी कविता – सुनो कहानी हनु की हम सबके प्यारे हनु की। उसके बाद सेविकाओं से कुछ पहेलियाँ भी पूछा गया। कहानी को हम कविता में बच्चों को सुना सकते हैं।

सेविकाओं से बहुत सारे प्रश्न किए गए। उसके बाद कहानी पर विस्तार से बात हुई। कैसे कहानी के माध्यम से हम बच्चो को देश बिदेश की सैर करा सकते हैं, बच्चो को बहुत सारे सन्देश दे सकते है और अगर कहानी कल्पनिक हो तो बच्चो की रूचि और ज्यादा बढ़ जाती है। खासकर जानवरों की कहानी बच्चों को और रोमांचक लगने लगती है।

दूसरा दिन कार्यशाला का दूसरा दिन प्रार्थना से शुरू किया गया और उसके बाद सभी सेविकाओं के साथ की गई गतिविधि का पूर्वाभ्यास करवाया गया। फिर शफा अकील द्वारा बच्चों को व्यस्त रखने के लिए विज्ञान का प्रयोग दिखया गया- दो रंगों को मिलाकर तीसरा रंग बनाना दिखाया गया जिसके बाद आंगनबाड़ी सेंटर पर मिली पठन –पाठन सामग्री से कठपुतली बनवाई गई और कहानी पाठ का आयोजन किया गया।

बस रोको - इस गतिविधि में सभी सेविकाओं को एक पेपर दिया गया जिससे उन्हें एक बाक्स बनाना था जिसमें कुछ व्यंजन दिए गए और उन व्यंजनों से कुछ वाक्य बनाना सिखाया गया।

वैज्ञानिक प्रयोग – बच्चों की विज्ञान की थोड़ी समझ हो इसके लिए सेविकाओं को दो रंग मिलाकर तीसरे रंग का निर्माण कर के दिखाया गया। जिसे सेविका अपने केंद्र पर आसानी से कर सकती है।

गणित से जुडी गतिविधि – इसमें सेविकाओं को बच्चों के साथ

अंक और गिनती सिखाने का आसान तरीका बताया गया।

किचेन गतिविधि – बिन आग हम क्या क्या बना सकते हैं? –चना और मूंग को अंकुरित कर हम बच्चों को संतुलित आहार दे सकते हैं।

उपस्थित सेविकायें

दिन	पंचायत	सेविकाओं की संख्या
29 मार्च 2024	10	103
30 मार्च 2024	10	85

सेविका की केस स्टोरी

नाम – मिन्टू देवी, ग्राम – संथू , केंद्र – संथू, कोड - 13113, उम्र - 41 वर्ष

मिन्टू देवी का आँगनबाड़ी केंद्र संथू ग्राम में पहला केंद्र है, जो राजकीय प्राथमिक विद्यालय संथू में स्थित है। मिन्टू जी का घर संथू है परन्तु अब वह सिवान में निवास करती है। वह नियमित समय से अपने केंद्र पर आती है और आंगनबाड़ी पर अपने प्रोग्राम के अनुसार शाम को सिवान चली जाती है। मिन्टू जी बहुत एक्टिव सेविकाओ में से एक हैं, एक बार जो गतिविधि देख लेती है वह सीख लेती है और अपने केंद्र पर जाकर बच्चो के समक्ष बहुत सुन्दर तरीका से कराती है। उन्हें बालगीत,कविता, कहानी, बहुत दिनों तक याद रहता है। परिवर्तन द्वारा आयोजित सेविका प्रशिक्षण में जो गतिविधि,कविता, कहानी बताया जाता है वह उन्हें बहुत दिनों तक याद रहता है। विद्यालय में केंद्र होने की वजह से बच्चे विद्यालय के बच्चो की तरह खूब जोर-जोर से कविता, कहानी एक साथ पढ़ते है। मिन्टू का केंद्र राजकीय प्राथमिक विद्यालय में होने से या उनके प्रयास से केंद्र हमेशा बहुत साफ-सुथरा रहता है। उनके केंद्र पर बच्चो की उपस्थिति भी बहुत ज्यादा संख्या में रहती है। वह अपनी नौकरी बहुत जिम्मेवारी के साथ करती है, किसी प्रकार की शिकायत का मौका नहीं देती है। वह सब काम सहायिका के भरोसे नहीं छोड़ती है, बहुत कुछ कम सयम में भी कर लेती है। मार्च महीने में महाशिवरात्रि थी और सदियों से महाशिवरात्रि में संथू में बहुत भारी मेला लगता है। मेला के बावजूद भी उनके केंद्र पर बच्चो की उपस्थिति अच्छी रहती थी। यह सब बच्चो की अच्छी उपस्थिति मिन्टू जी के केंद्र पर समय से आने एवं समय से जाने के कारण था।

नाम – रमिता देवी, ग्राम – मियाँ के भटकन शर्माटोला , केंद्र – मियाँ के भटकन शर्माटोला, कोड – 10089, उम्र - 35 वर्ष

रमिता जी का घर मियाँ भटकन शर्मा टोला है। वह अपने गाँव में स्थायी रूप से निवास करती है। विजिट के दौरान मैं जब भी रमिता जी के केंद्र पर गई हूँ उस समय रमिता जी अपने बच्चों के साथ बैठकर गिनती या कविता करवाती हुई ही नजर आई हैं। एक दिन रमिता जी अपने केंद्र पर बच्चों के साथ कविता कहानी करा रही थी, उसी समय एक आई. सी.डी.एस. सुपरवाइजर का आगमन हुआ। रमिता जी की गतिविधि देख सुपरवाइजर साहिबा बहुत खुश हुईं और कहने लगीं कि आप के जैसी सभी सेविकायें यदि मेहनत करने लगे तो बच्चों का कल्याण हो जायेगा। पिछले सप्ताह जब मैं रमिता जी के केंद्र पर गई हुई थी तो बच्चे बोल रहे थे -मैडम जी आप कब हमलोगों को परिवर्तन ले चलेंगी? मैंने बच्चों को समझाया - ठीक है इस बार मै तुम लोगो को छह माह के लिए परिवर्तन ले चलूँगी। उसी बीच रमिता जी आईं और यही बात बोलने लगीं - अब मुझे नया कविता की जरूरत है जो मैं सीखी थी उतना मै बच्चों को सिखा दी हूँ अब मुझे नया कविता चाहिए। तब मैंने उन्हें एक दूसरा कविता,कहानियाँ दिया। एक माह बाद मैं रमिता जी के केंद्र पर फिर गयी। बच्चो से कविता, कहानी, गतिविधि के बारे में पूछने लगी तो एक अंजनी नाम की लड़की उठी एवं एक के बाद एक कविता,कहानी,धराप्रवाह पढ़ने लगी। और भी बच्चे अंजनी की तरह ही कविता, कहानी एवं सारी गतिविधियाँ याद कर चुके थे। मैं रमिता जी को धन्यवाद बोली - आप की मेहनत सफल हुई।

नाटक - देश के बच्चे

दिनांक : 07-02-24 को नारायणपुर, सोनी जी के सेंटर पर गोदभराई दिवस और गुनगुन कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। जब हमलोग सोनी जी के केंद्र पर पहुंचे तो देखे कि उनका केंद्र बंद था। फिर जल्दी से सहायिका आई और केंद्र को खोली और झाड़ू लगाना शुरू की, झाड़ू जब लग गया उसके बाद राज सर द्वारा बहुत ही सुंदर रंगोली को बनाया गया। तब तक सहायिका ने सारे बच्चों को इकट्ठा कर लिया फिर गुनगुन कार्यशाला को बच्चों के साथ मिलकर शूरू किया गया। प्रार्थना होते – होते अभिवावक भी उस स्थल पर पहुच गये और सभी नेकार्यक्रम को शांति पूर्वक देखा। गुनगुन कार्यशाला का कार्यक्रम समाप्त हुआ

फिर बच्चों के नाटक की प्रस्तुती शुरू हुई। बच्चों ने तो कमाल ही कर दिया! किसी भी बच्चे के चेहरे पर शिकन नहीं थी। उन्होंने अपना –अपना रोल बहुत ही सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया। इन बच्चों की प्रस्तुती देखकर गाँव के लोग भी कहने लगे - वाकई में ये बच्चे कमाल के हैं।

बच्चों की केस स्टोरी

नाम – फलक खातून, ग्राम – बाबूभटकन, उम्र – 5 वर्ष

फलक खातून बाबू भटकन की रहने वाली बहुत ही चंचल बच्ची है। जब मुझे आंगनबाड़ी से बच्चा परिवर्तन क्लास के लिए लाने के लिए बोला गया तो बाबू के भटकन आंगनबाड़ी केंद्र पर मैं गयी। सेविका के सुझाव से 5 बच्चो का नाम लिखी। उस लिस्ट में फलक का भी नाम था परन्तु फलक अपने आंगनबाड़ी केंद्र से बाहर जाना नहीं चाहती थी। वह रोने लगी। सेविका उसे बहुत समझाई कि तुम रोज परिवर्तन की गाड़ी से जाओगी और फिर पढ़कर परिवर्तन की गाड़ी से ही आना है। और परिवर्तन में झूला है वहाँ की मैडम रोज झूला झुलाएगी,कविता कहानी सुनाएगी। तो फिर फलक बोली –फिर मैं भी जाऊँगी। अगले दिन से फलक और भी बच्चे नियमित रूप से क्लास आने लगे। धीरे-धीरे वो सेंटर के लिए एक रोल मॉडल बन गयी। उसके अन्दर बहुत ज्यादा लीडरशीप था, आज

कौन सा गेम खेलना है फलक को सब जानकारी बहुत जल्दी हो गयी। फलक आगे चल कर डॉक्टर बनना चाहती है।

नाम – रोशनी कुमारी, ग्राम – नरेन्द्रपुर, उम्र – 4 वर्ष

रोशनी अपनी बहन गुड़िया के साथ बालघर की नियमित छात्रा थी। कोइ ऐसा दिन नहीं था कि रौशनी बालघर नहीं आती थी। जिस दिन मैं छुट्टी पर रहती थी उस दिन फोन करके कहती थी - मैडम जी गाड़ी लेकर क्यों नहीं आई मुझे लेने के लिए ? वह समय से पहले ही तैयार होकर गाड़ी आने का इंतजार करती थी। उसके साथ जितने बच्चे थे सब एक से बढ़कर एक थे। रोशनी उम्र में सबसे छोटी थी पर उसका दिमाग सबसे तेज था। क्लास के अंदर कोई भी कविता कहानी हम सिखाते थे सबसे पहले रोशनी याद कर लेती थी। यही नहीं कोई भी गेम मैं बच्चो को सिखाती थी रोशनी उसे बहुत असानी से सीख लेती थी और यहाँ से सीख कर अपने सेंटर पर जाकर और बच्चो को सिखाती थी। इसलिए सारे बच्चे उसके दोस्त बन गए थे।